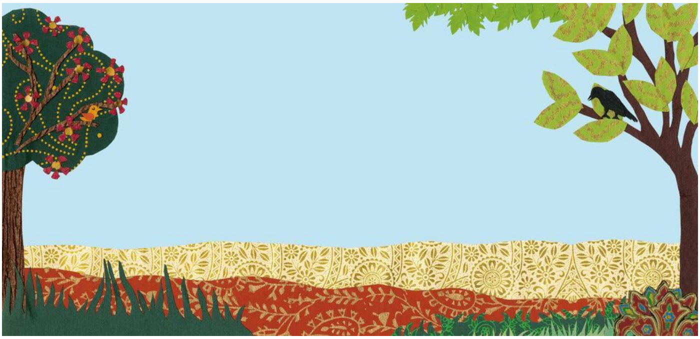

पठन स्तर २

काका और मुन्नी

Author: Natasha Sharma

Illustrator: Natasha Sharma

Translator: Vartul Adishesh Dhaundiyal

पंजाब के किसी गाँव में गेहूँ के खेतों के पास एक गुलमोहर के पेड़ पर मुन्नी गौरैया अपने घोंसले के पास बैठी थी। अपने तीन अनमोल छोटे-छोटे अंडों की निगरानी करती वह उनसे चूज़ों के निकलने का इंतज़ार कर रही थी। मुन्नी सुर्ख लाल फूलों को देखती खुश हो रही थी कि तभी ऊपर की डाल पर एक काला साया दिखा। वह गाँव का लफंगा, काका कौवा था। मुन्नी घबराकर चीं-चीं करने लगी।

“ए मुन्नी! परे हट, मैं तेरे अंडे खाने आया हूँ,” वह चहक कर बोला। मुन्नी समझदार गौरैया थी। वह झटपट बोली, “काका किसी की क्या मजाल कि तुम्हारी बात न माने? लेकिन मेरी एक विनती है। मेरे अंडों को खाने से पहले तुम ज़रा अपनी चोंच धो आओ। यह तो बहुत गन्दी लग रही है।”

काका खुद को बहुत बाँका समझता था। उसे यह बात अच्छी नहीं लगी कि वह साफ़ -सुथरा नहीं दिख रहा। वह झटपट पानी की धारा के पास पहुँचा। वह धारा में अपनी चोंच डुबो ही रहा था कि धारा ज़ोर से चिल्लाई, “काका! रुको! अगर तुमने अपनी गन्दी चोंच मुझ में डुबोई तो मेरा सारा पानी गन्दा हो जायेगा। तुम एक कसोरा ले आओ। उस में पानी भरकर अपनी चोंच उसी में धो लो।”

धारा की बात सुनकर काका गाँव के कुम्हार के पास गया और बोला,

“अजी ओ कुम्हार प्यारे,
काका आया पास तुम्हारे

एक कसोरा तुम बनाओ
जिसमें मैं पानी भर लाऊँ
अपनी गन्दी चोंच धुलाऊँ
फिर खा लूँ मुन्नी के अंडे
और काँव-काँव चिल्लाऊँ
ताकि सभी सुनें
और जान जायें
मैं हूँ सबसे बाँका
सबसे छैला कौवा!”

कुम्हार बोला, “मैं तो बड़ी खुशी से तुम्हारे लिए कसोरा बनाऊँ, लेकिन मुझे उसके लिए मिट्टी की ज़रूरत है। तुम ज़रा फटाफट मिट्टी ले आओ।”

अब काका उड़कर पास के खेत पर गया और खेत से बोला,

"अजी ओ खेत प्यारे

काका आया पास तुम्हारे

थोड़ी मट्टि्टी मैं ले लूँ

और कुम्हार को दे दूँ

जसिसे बनाये वो एक कसोरा

जसिमें मैं पानी भर लाऊँ

अपनी गन्दी चोंच धुलाऊँ

फरि खा लूँ मुन्नी के अंडे

और काँव-काँव चलि्लाऊँ

ताक सिभी सुनें

और जान जायें

मैं हूँ सबसे बाँका

सबसे छैला कौवा!”

“बरसात अभी हुई नहीं है। मैं अभी सूखा सख्त हूँ, मुझे खोदने के लिए फ़ौरन कोई नुकीली चीज़ ले आओ,” खेत बोला।

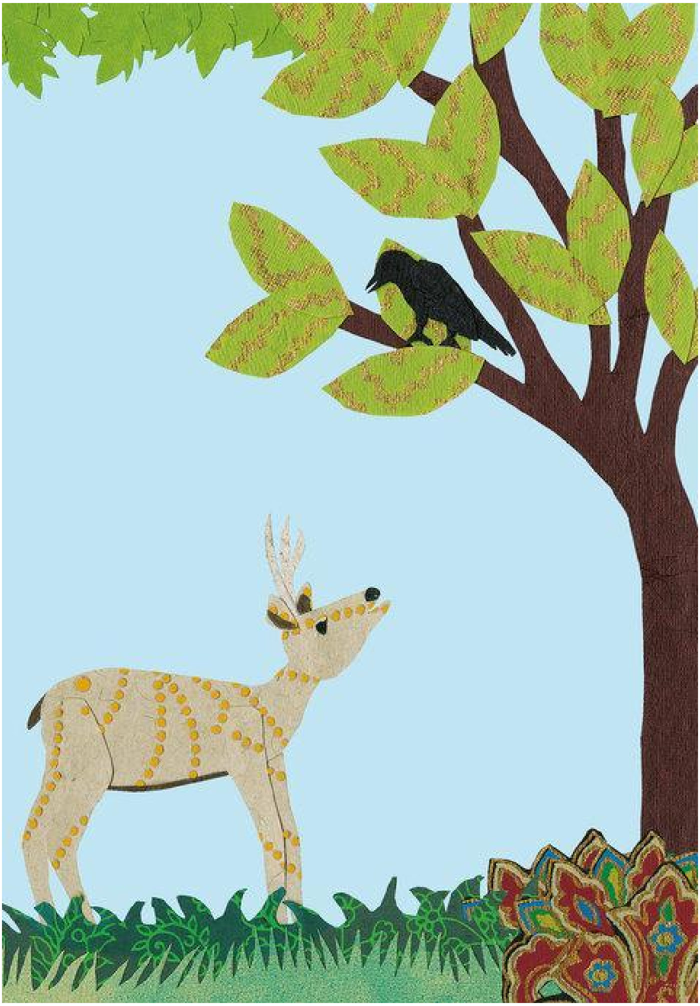

काका जंगल में जा पहुँचा। उसे नुकीले सींगो वाला एक हरिन दखिा तो वह उससे बोला,

“अरे दोस्त! ओ हरिन प्यारे

काका आया पास तुम्हारे

अपना सींग मुझे दे दो

जिससे थोड़ी मिट्टी खोदूँ

और कुम्हार को दे दूँ

जिससे बनाये वो एक कसोरा

जिसमें मैं पानी भर लाऊँ

अपनी गन्दी चोंच धुलाऊँ

फिर खा लूँ मुन्नी के अंडे

और काँव-काँव चिल्लाऊँ

ताकि सभी सुनें

और जान जायें

मैं हूँ सबसे बाँका

सबसे छैला कौवा!”

हिरन चिढ़ कर बोला “अरे अकलमन्द की पूँछ, ज़रा यह बता तो सही कि जब तक मैं ज़िन्दा हूँ तू मेरा सींग कैसे ले सकता है?”

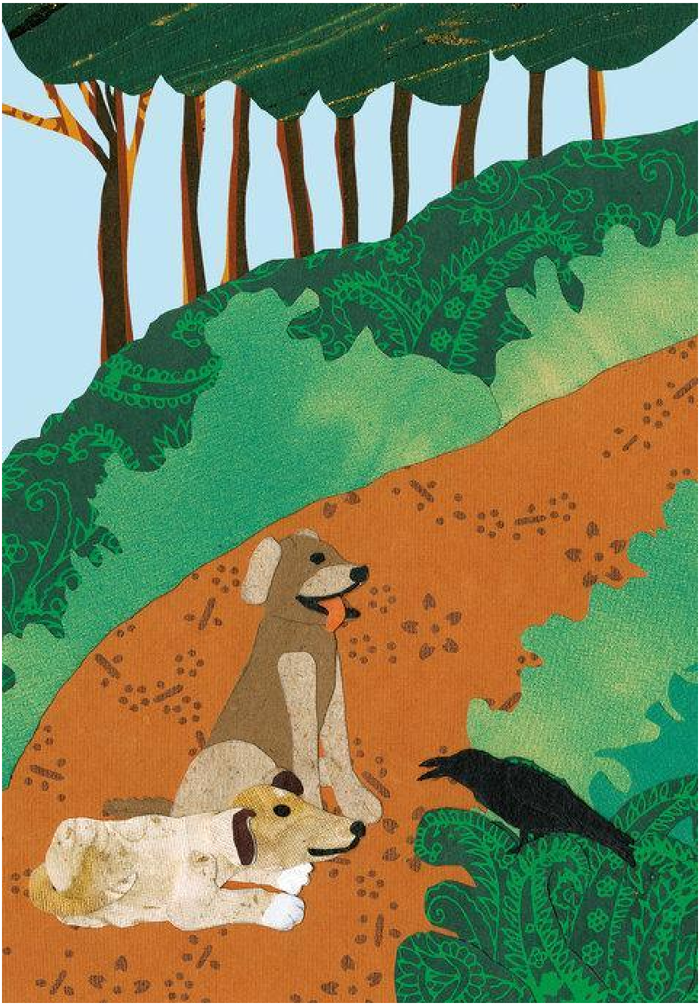

काका को ज़ोरों की भूख लगी थी, वह तेज़ी से मँडराया तभी...

उसे दो ख़तरनाक से कुत्ते दखिे। काका फ़ौरन उनके पास जा पहुँचा और उनकी खुशामद करने लगा,

“अजी ओ भैया कुत्ते प्यारे,
काका आया पास तुम्हारे
आज तुम्हें दावत खिलवाऊँ
मोटा-ताज़ा हिरन दिखाऊँ,
बस सींग उसका मैं ले लूँगा
उससे थोड़ी मिट्टी खोदूँगा
मिट्टी कुम्हार को दे दूँगा
जिससे बनाये वो एक कसोरा
जिसमें मैं पानी भर लाऊँ
अपनी गन्दी चोंच धुलाऊँ
फिर खा लूँ मुन्नी के अंडे
और काँव-काँव चिल्लाऊँ
ताकि सभी सुनें
और जान जायें
मैं हूँ सबसे बाँका
सबसे छैला कौवा!”

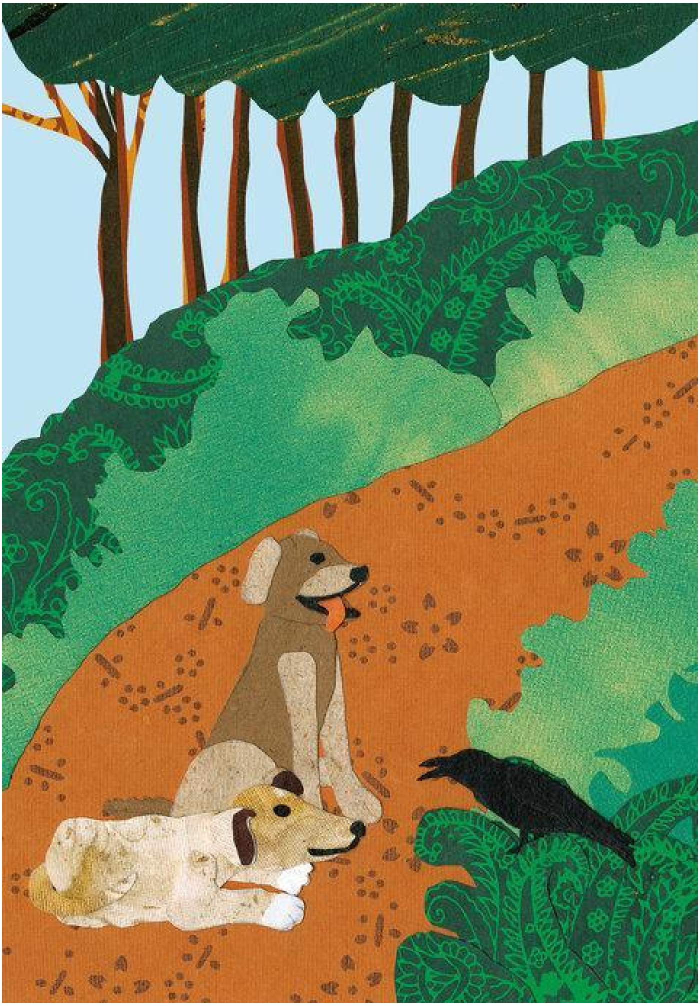

“इतनी गर्मी में तो यह बहुत कड़ा काम है,”
कुत्ते बड़बड़ाए, “हिरन मारने के लिए हमें ताकत चाहिए। जाओ थोड़ा दूध ले आओ, फिर सोचते हैं।”

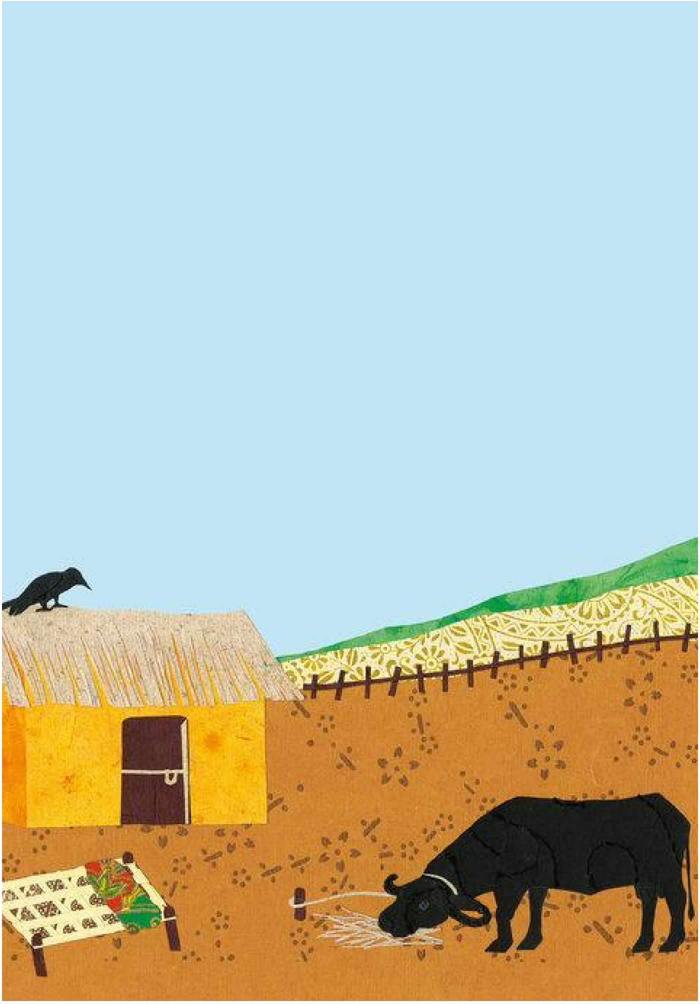

अब काका भूसा खा कर जुगाली कर रही भैंस के पास पहुँचा और बोला,

“नमस्ते भैंस दीदी प्यारी,

काका आया शरण तुम्हारी

मुझको दे दो थोड़ा दूध

कुत्तों को पिलाने के लिए

मुझे उनकी मदद चाहिए
हिरन को मारने के लिए
जिसके सींग मैं ले लूँगा
थोड़ी मिट्टी खोद लूँगा
मिट्टी कुम्हार को दे दूँगा
वो बनाएगा एक कसोरा
जिसमें मैं पानी भर लाऊँ
अपनी गन्दी चोंच धुलाऊँ
फिर खा लूँ मुन्नी के अंडे
और काँव-काँव चिल्लाऊँ
ताकि सभी सुनें
और जान जायें
मैं हूँ सबसे बाँका
सबसे छैला कौवा!”

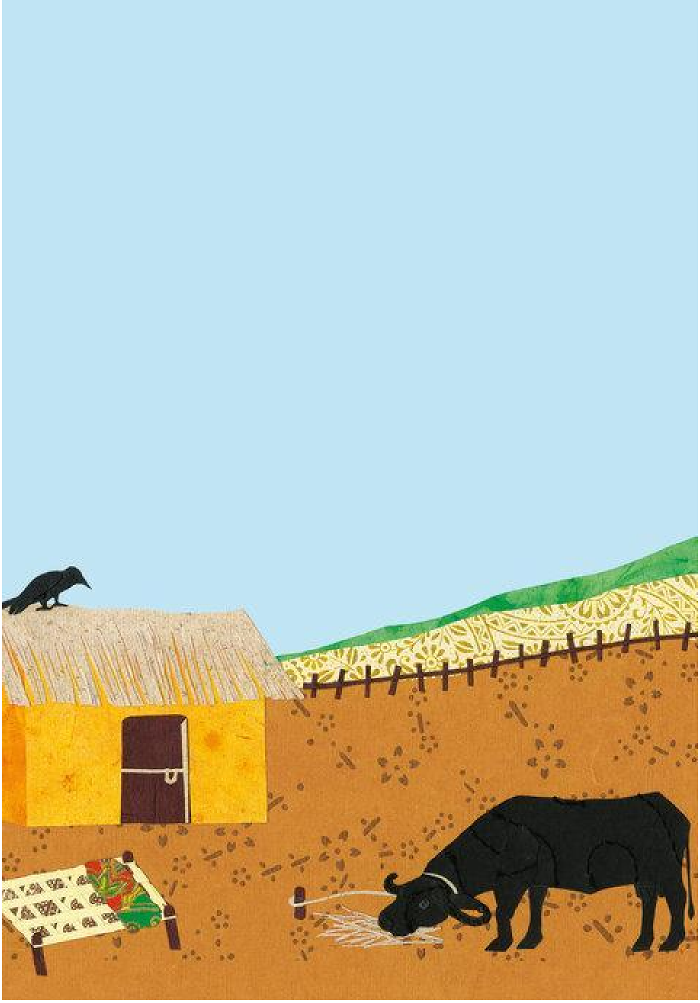

“सूखा पुआल खा कर दूध कहाँ से दूँ? हाँ थोड़ी रसीली घास खाने को मलि जाए तो मैं ज़रूर तुम्हें दूध दे दूँ,” भैंस ने रम्भा कर जवाब दयिा।

यह सुनकर काका उगी घास के ऊपर मँडराया और बोला,

“बहना मेरी ओ घास प्यारी,

काका आया शरण तुम्हारी

चलो ज़रा तुम साथ मेरे

भैंस बेचारी है दुखियारी

भूसा खा-खा सूख गई है
मुझे उसका दूध चाहिए
कुत्तों को पिलाने के लिए
कुत्तों की मुझे मदद चाहिए
हिरन को मारने के लिए
उसके सींग मैं ले लूँगा
थोड़ी मिट्टी खोद लूँगा
मिट्टी कुम्हार को दे दूँगा
जिससे बनाएगा वो एक कसोरा
जिसमें मैं पानी भर लाऊँ
अपनी गन्दी चोंच धुलाऊँ
फिर खा लूँ मुन्नी के अंडे और काँव-काँव चिल्लाऊँ
ताकि सभी सुनें और जान जायें मैं हूँ सबसे बाँका सबसे छैला कौवा!”

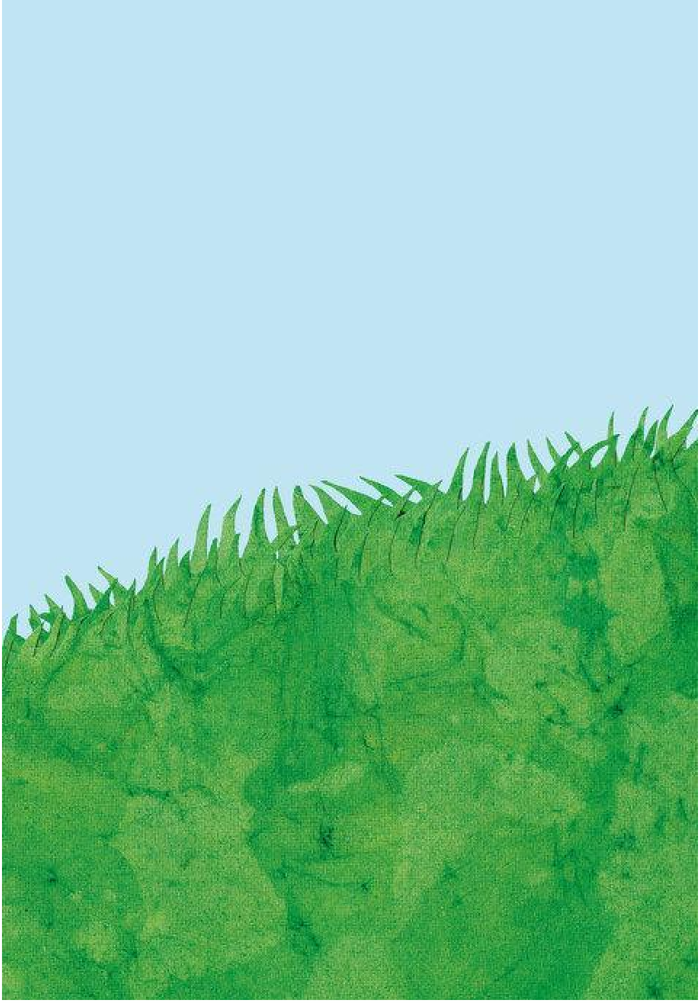

“लेकनि तुम मुझे काटोगे कैसे?” घास फुसफुसाई, “पहले लुहार से हँसयिा तो ले आओ।”

अब तक काका को बहुत ज़ोर की भूख लग चुकी थी,

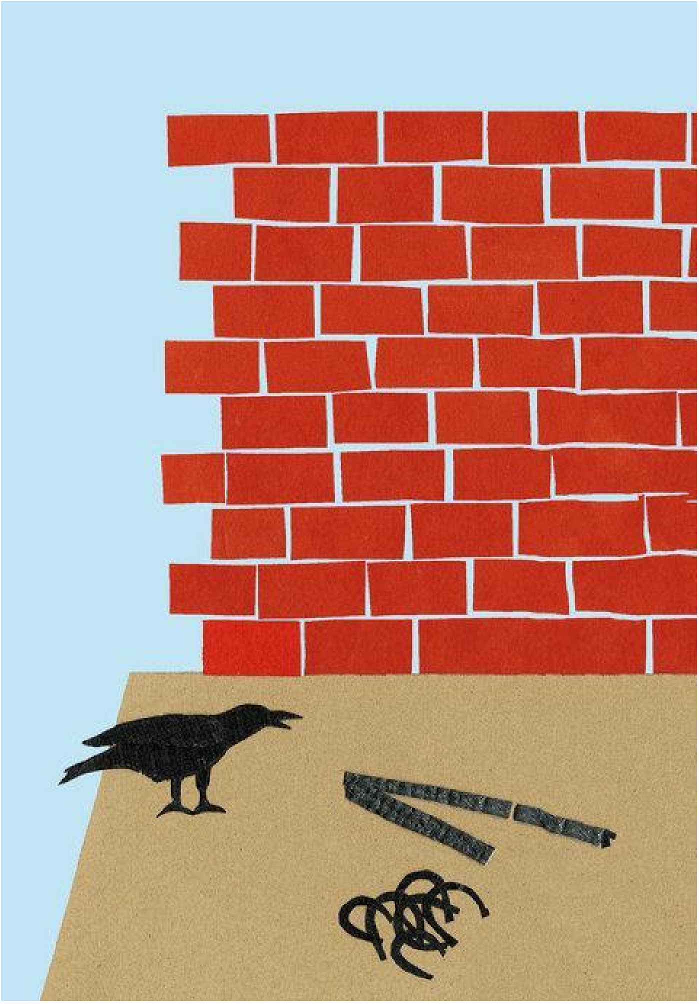

वह झपटता हुआ लुहार के पास पहुँचा और बोला,

“सलाम चचा लुहार प्यारे,

काका आया पास तुम्हारे

एक हँसयिा दे दो मुझे

घास काट सकूँ जसिसे

उसको अपने साथ ले जाऊँ

भूखी भैंस को खिलाऊँ

मुझे उसका दूध चाहिए

कुत्तों को पिलाने के लिए

कुत्तों की मुझे मदद चाहिए

हिरन को मारने के लिए

उसके सींग मैं ले लूँगा

थोड़ी मिट्टी खोदने के लिए

और कुम्हार को दे दूँगा

एक कसोरा बनाने के लिए

जिसमें मैं पानी भर लाऊँ

अपनी गन्दी चोंच धुलाऊँ

फिर खा लूँ मुन्नी के अंडे

और काँव-काँव चिल्लाऊँ

ताकि सभी सुनें और जान जायें

मैं हूँ सबसे बाँका सबसे छैला कौवा!”

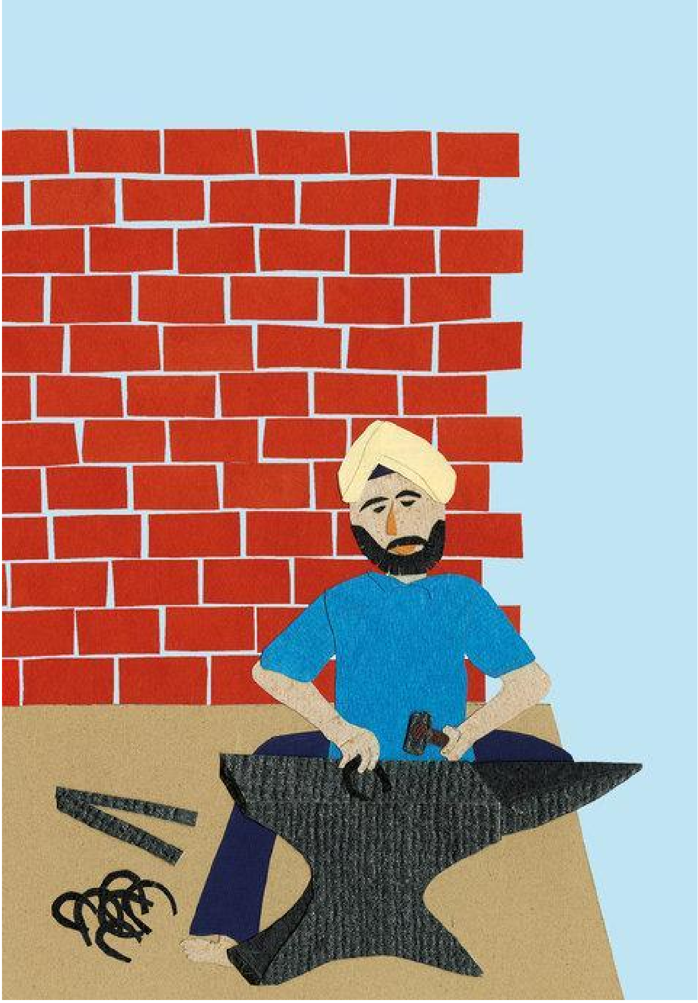

बाकी सभी की तरह लुहार भी मुन्नी के अंडों को बचाना चाहता था। उसने कहा, “अभी बनाता हूँ हँसिया। तुम ज़रा पीछे जाकर भट्ठी का दरवाज़ा खोलो और इस लोहे के टुकड़े को उसमें रख दो”

काका ने खुशी-खुशी भट्ठी का दरवाज़ा खोला। तभी हवा का तेज़ झोंका आया और काका भट्ठी के कोयलों पर उलटा जा गिरा। उसकी पूँछ जल गयी। पूँछ की आग बुझाता काका चीखा,

"हाय हाय! मेरा पुंजा सड़या!

ओए होए! मेरा पुंजा सड़या!"

पंजाबी में इसका मतलब होता है,

"हाय रे मेरी पूँछ जल गयी!"

घमंडी काका नहीं चाहता था कि लोग जान जाएँ कि उस की पूँछ जल गई है। वह उस गाँव से बहुत दूर उड़ गया और फिर कभी वापस नहीं आया।

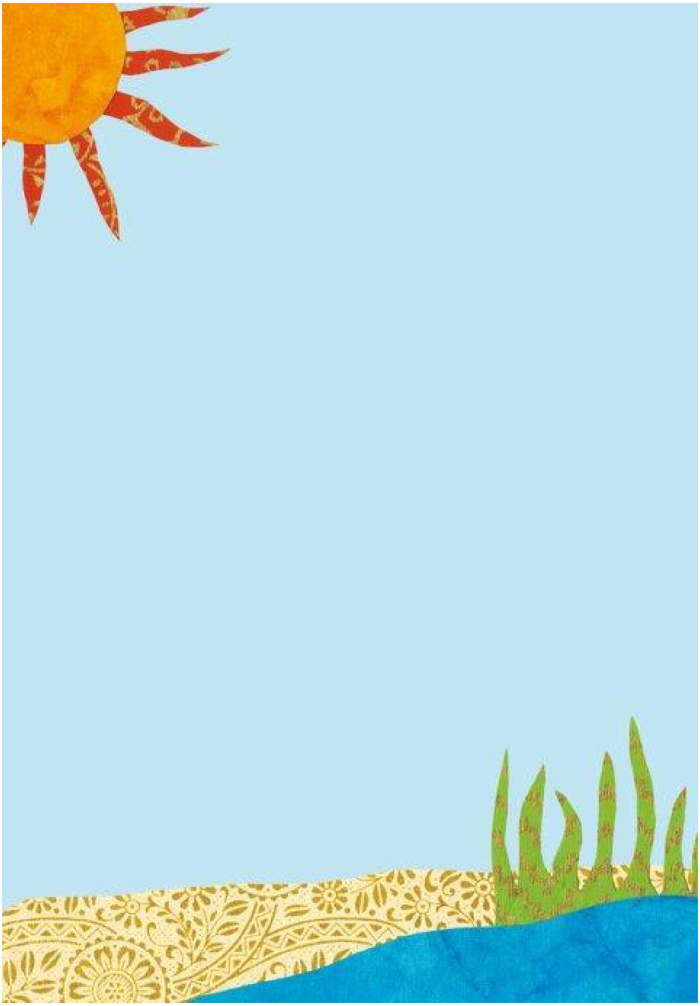

कोलाज क्या होता है?

इस किताब में आपने जितने भी चित्र देखे वह कोलाज (Collage) हैं। कोलाज, अलग-अलग चीज़ों के टुकड़ों को जोड़कर एक नयी तस्वीर को बनाने का एक तरीका होता है। यह चीज़ें हाथों से बनी या इस किताब की

तरह छपा हुआ काग़ज, अखबार और मैगज़ीन की कतरनें, पुराने कार्ड, छायाचित्र,
कपड़ा, रबिन, सूखे फूल या पत्ते, या आसानी से मलि जानेवाली कोई भी चीज़ हो
सकती है!

‘कोलाज’ शब्द फ़्रेंच शब्द ‘कोले’ से बना है जसिका अर्थ है- चपिकाना। एक
कोलाज बनाने के लिए अलग-अलग चीज़ों, उन्हें काटने के लिए कैंची और फरि
उन्हें चपिकाने के लिए ढेर सारे गोंद की ज़रूरत होती है।

इस पृष्ठ में चार तत्वों वायु, जल, पृथ्वी और दहकते हुए सूर्य को दर्शाया गया है।
जैसे इस कतिाब में कागज़ के टुकड़ों का इस्तेमाल हुआ है वैसे ही तुम कागज़ के
टुकड़े
ढूँढकर अपना खुद का कोलाज बनाओ!

PRATHAM BOOKS
storyweaver

This book was made possible by Pratham Books' StoryWeaver platform. Content under Creative Commons licenses can be downloaded, translated and can even be used to create new stories - provided you give appropriate credit, and indicate if changes were made. To know more about this, and the full terms of use and attribution, please visit the following link .

Story Attribution:

This story: काका और मुन्नी is translated by Vartul Adishesh Dhaundiyal . The © for this translation lies with Pratham Books, 2012. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Based on Original story: ' Kaka and Munni: A Folktale from Punjab ' , by Natasha Sharma . © Pratham Books , 2012. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Other Credits:

This book has been published on StoryWeaver by Pratham Books. Pratham Books is a not-for-profit organization that publishes books in multiple Indian languages to promote reading among children. www.prathambooks.org

Illustration Attributions:

Cover page: Trees in a field , by Natasha Sharma © Pratham Books, 2011. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 2: Bird in a field , by Natasha Sharma © Pratham Books, 2011. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 3: Bird's nest in a tree , by Natasha Sharma © Pratham Books, 2011. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 4: Crow drinking water from a stream , by Natasha Sharma © Pratham Books, 2011. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 5: Potter talking to crow , by Natasha Sharma © Pratham Books, 2011. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 6: Crow in a muddy field , by Natasha Sharma © Pratham Books, 2011. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 7: Deer talking to bird perched on a tree , by Natasha Sharma © Pratham Books, 2011. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 8: Dogs and crow , by Natasha Sharma © Pratham Books, 2011. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 9: Dogs and crow , by Natasha Sharma © Pratham Books, 2011. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 10: Crow and grazing buffalo , by Natasha Sharma © Pratham Books, 2011. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Disclaimer: https://www.storyweaver.org.in/terms_and_conditions

Some rights reserved. This book is CC--BY--4.0 licensed. You can copy, modify, distribute and perform the work, even for commercial purposes, all without asking permission. For full terms of use and attribution, http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

PRATHAM BOOKS
storyweaver

This book was made possible by Pratham Books' StoryWeaver platform. Content under Creative Commons licenses can be downloaded, translated and can even be used to create new stories - provided you give appropriate credit, and indicate if changes were made. To know more about this, and the full terms of use and attribution, please visit the following link .

Illustration Attributions:

Page 11: Crow and grazing buffalo , by Natasha Sharma © Pratham Books, 2011. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 12: Crow in a grassy field , by Natasha Sharma © Pratham Books, 2011. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 13: Green grass , by Natasha Sharma © Pratham Books, 2011. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 14: Crow near a brick wall , by Natasha Sharma © Pratham Books, 2011. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 15: Blacksmith working , by Natasha Sharma © Pratham Books, 2011. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 16: Crows near fire , by Natasha Sharma © Pratham Books, 2011. Some rights reserved.

Released under CC BY 4.0 license. Page 17: Flying crow in a field , by Natasha Sharma © Pratham Books, 2011. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 18: Sun shining over a field , by Natasha Sharma © Pratham Books, 2011. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Disclaimer: https://www.storyweaver.org.in/terms_and_conditions

Some rights reserved. This book is CC--BY--4.0 licensed. You can copy, modify, distribute and perform the work, even for commercial purposes, all without asking permission. For full terms of use and attribution, http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

काका और मुन्नी (Hindi)

दुष्ट कौवा काका मुन्नी चिड़िया के अंडे खाना चाहता है। लेकिन मुन्नी बहुत होशियार गौरैया है। क्या काका उस के अंडे खा पायेगा? पंजाब की इस प्रसिद्ध लोककथा को पढ़ें और इसके हर पात्र की सूझबूझ का मज़ा लें।

यह पठन स्तर २ की किताब है, उन बच्चों के लिए जो सरल शब्द पढ़ लेते हैं और थोड़ी मदद से नए शब्द भी पढ़ सकते हैं।

PRATHAM BOOKS
storyweaver

Pratham Books goes digital to weave a whole new chapter in the realm of multilingual children's stories. Knitting together children, authors, illustrators and publishers. Folding in teachers, and translators. To create a rich fabric of openly licensed multilingual stories for the children of India -- and the world. Our unique online platform, StoryWeaver, is a playground where children, parents, teachers and librarians can get creative. Come, start weaving today, and help us get a book in every child's hand!